Q. इंगलैण्ड में लोहा तथा इस्पात उद्योग।

Ans. आज के युग में वही देश शक्तिशाली माना जाता है जिसका लोहा एवं इस्पात का उत्पादन अत्यधिक मात्रा में होता है। ब्रिटेन कोयले द्वारा लोहे को गलाने की क्रिया में अग्रणी रहा है, लोहा उद्योग ब्रिटिश औद्योगिक क्रान्ति का जनक रहा है।

ग्रेट ब्रिटेन में लोहा तथा इस्पात उद्योग के विकास में स्वीडेन तथा रूस से आयात किये गए लोहे पर लगाये गए कर से अत्यधिक सहायता मिली। रेलवे के निर्माण तथा जहाजों में लकड़ी के जगह लोहे के प्रयोग से इस्पात के मांग में भारी वृद्धि हुई, जिससे इस उद्योग के विकास में गयी तीव्रता आ गयी। इस प्रकार उन्नीसवीं शताब्दी में इस्पात की उत्पत्ति के सम्बन्ध में बहुत प्रगति हुई।

रेलवे उद्योग एवं अन्य प्रकार के यन्त्रों के निर्माण के लिए लोहा तथा इस्पात की मांग बहुत अधिक होती है। 1870 ई० में इंगलैंड लोहा उत्पादन के क्षेत्र में विश्व की शिरोमणि था तथा जर्मनी, फ्रांस एवं अमेरिका देशों में घटते के लोहे की अत्यधिक मांगों देश ब्रिटेन से लोहे का आयात करते थे।

ब्रिटिश लोहा तथा इस्पात उद्योग की यह स्थिति 1890 ई० बनी रही। इसके बाद अमेरिका ने इंगलैण्ड को लोहे के उत्पादन में पीछे कर दिया। धीरे-धीरे जर्मनी में भी इस उद्योग का द्रुतगति से विकास होने लगा तथा 1907 ई० तक यह भी आगे निकल गया। 1913 ई० में इंगलैण्ड की तुलना में अमेरिका के इस्पात-उद्योग का उत्पादन चौगुना तथा जर्मनी का तीन गुना था। फिर भी इंगलैण्ड लोहा तथा इस्पात का बहुत बड़ी मात्रा में निर्यात करता था।

प्रथम विश्व-युद्ध में अस्त्र-शस्त्र आदि के निर्माण के लिए लोहे और इस्पात की माँग में वृद्धि के कारण इसके उत्पादन में भी वृद्धि हुई। युद्ध काल में इंगलैण्ड के इस्पात का वार्षिक उत्पादन 80 लाख टन से बढ़कर 102 लाख टन हो गया।

युद्ध समाप्ति के बाद 1920 ई० से उस उद्योग को मन्दी का सामना करना पड़ा, जिससे उसके उत्पादन में कमी हो गयी।

भयानक आर्थिक मन्दी के बाद 1933 ई० से पुनः इस उद्योग में पुनरुद्धार के लक्षण दिखाई पड़ने लगे।

इसका प्रमुख कारण विश्व में शस्त्रीकरण के चलते लोहे एवं इस्पात की माँग में वृद्धि थी। इस समय की एक प्रधान विशेषता विदेशी प्रतियोगिता का सामना करने के लिए उद्योग में एकीकरण के साथ-साथ विवेकीकरण

Scanned with CamScanner

की ओर ध्यान देने की प्रवृत्ति है।
सभी छोटी-छोटी कम्पनियों को मिलाकर 12 निगमों की स्थापना की गयी।
1934 ई० में एक British Iron and Steel Federation की स्थापना की गयी।
द्वितीय विश्व-युद्ध की समाप्ति के बाद शीघ्र ही ब्रिटेन के लोहा तथा इस्पात-उद्योग पर पुनः संकट के बादल मडराने लगे।
1947 ई० के ईंधन संकट के कारण इस्पात के उत्पादन में भी कठिनाइयाँ उपस्थित होने लगी। 1952 ई० में इस कार्य के लिए एक Autonomous Corporation स्थापित की गयी।
लेबर दल की सरकार ने इस्पात उद्योग के पुनः राष्ट्रीयकरण के लिए तीन कारणों को प्रधानता दी जो इस प्रकार थे
(1) राष्ट्र के आर्थिक विकास की दर को आगे बढाने एवं ब्रिटेन के विभिन्न प्रदेशों में आर्थिक विकास का समान वितरण सम्भव बनाने में लोहा एवं इस्पात उद्योग की स्थिति अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

(2) इस उद्योग के विकास के लिए बहुत अधिक मात्रा में पूँजी की आवश्यकता पड़ती है जिसे निजी क्षेत्र द्वारा नहीं उपलब्ध नहीं कराया जा सकता जब कि इस्पात के मूल्य बहुत ऊँचे स्थिर न किये जायें। नियंत्रित एवं जनहित की दृष्टि से ऐसा करना सम्भव नहीं होगा।

Scanned with CamScanner

(3) लोहा एवं इस्पात - उद्योग एक पूंजी - प्रधान उद्योग है और इसमे एकाधिकार की प्रवृति का विकास शीघ्र होता है।
पूर्ति एवं माँग मे असन्तुलन उत्पन्न करके एकाधिकार की प्रवृत्तियाँ तेजी - मन्दी के चक्रो को प्रोत्साहन देती है।
राष्ट्रीयकरण की योजना से वस्तु ब्रिटेन के इस उद्योग को बहुत अधिक लाभ हुआ है।
केन्द्रीय स्तर पर उत्पादन एवं विक्रय मे सुधार किया गया है। इस उद्योग की प्रतियोगात्मक क्षमता मे वृद्धि हुई है तथा भविष्य मे निर्यात मे वृद्धि की आशा की जाती है।
1966 ई० मे इसकी वार्षिक उत्पादन क्षमता 10 लाख टन इस्पात की थी।
1980 मे यह विश्व के इस्पात उत्पादक देशो मे आठवाँ था।

Scanned with CamScanner